विषयसूची

ममेद इस्केन्देरोव

प्रकाशक का वक्तव्य

यह पुस्तिका जिसके लेखक एक प्रमुख सोवियत राजनेता और अजरबैजान सोवियत समाजवादी जनतन्त्र की मन्त्रीपरिषद के अध्यक्ष महम्मद इस्कन्दरोव है, पाठकों को भेंट करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष है।

महम्मद इस्कन्दरोव का जन्म सन् १९१५ में एर्दवाजार नामक छोटे-से गांव में हुआ था। वह एक गरीब किसान परिवार में पैदा हुए, पर सोवियत व्यवस्था ने उन्हें व्यापक अवसर प्रदान किया। १४ वर्ष की उम्र में उन्होंने प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई समाप्त की और अजरबैजान के अध्यापकों के माध्यमिक स्कूल में दाखिल हो गये। अध्यापक का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के बाद वह गुदुरवर्नी स्वानलिंग ग्राम चले गये जहां उन्होंने कुछ समय तक माध्यमिक स्कूल में अध्यापक का काम किया।

बाकू वापस आकर महम्मद इस्कन्दरोव अजरबैजान औद्योगिक संस्थान में दाखिल हो गये और वहां से भूगर्भ विज्ञान के इंजीनियर का प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध में महम्मद इस्कन्दरोव सोवियत सेना के इंजीनियर दस्ते में थे। उन्होंने नाजी हमलावरों से काकेशस की प्रतिरक्षा में भाग लिया।

फौज से छूटने पर वह तेल उद्योग में काम करने लगे। वह काम के साथ पढ़ाई भी करने लगे और भूगर्भ विज्ञान तथा खनिज विज्ञान में पहले मास्टर और फिर डाक्टर की डिग्रियां हासिल कर लीं।

प्रमुख वैज्ञानिक, सार्वजनिक कार्यकर्ता और राजनेता महम्मद इस्कन्दरोव ने अपना समस्त ज्ञान, अपना सारा अनुभव और अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा अपने देश अजरबैजान को और भी सुन्दर तथा वहां की जनता के जीवन को और भी समुन्नत बनाने के लिए अर्पित कर रखा है।

अजरबैजान की ऐतिहासिक उपलब्धियों में कम्युनिस्ट पार्टी ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। आर्थिक और सामाजिक आजादी की आम जनता की लड़ाई का कम्युनिस्टों ने नेतृत्व किया। उन्होंने हथियार लेकर सोवियत व्यवस्था की उसके अनेक शत्रुओं से रक्षा की। नवजीवन के निर्माताओं के वे सदा हिरावल रहे हैं। यही कारण है कि अजरबैजान की कम्युनिस्ट पार्टी को मजदूर, किसान और बुद्धिजीवी हृदय से प्यार करते और उसका आभार मानते हैं। जैसा कि कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत संघ की सभी जातियों के लिए किया, वैसे ही अजरबैजानी जाति के लिए भी उसने समृद्धि और संस्कृति का एक प्रशस्त और सीधा मार्ग खोल दिया है।

१९१७ की अक्तूबर-क्रान्ति ने जारशाही द्वारा जातीय अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न का सदा के लिए अन्त कर दिया। उसने अजरबैजानी जनता को मुक्त और स्वतंत्र बनाया। जातीय समस्या का कम्युनिस्ट पार्टी जो हल पेश करती है, वह यह है कि जातियां स्वेच्छापूर्वक अपना संघ बनायें जिसमें एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य के प्रति किसी भी प्रकार के बल-प्रयोग की जगह न रहे और जो पूर्ण विश्वास, बन्धुत्वपूर्ण एकता और मेल पर आधारित हो।

१९२२ में सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना सोवियत भूमि की सभी जातियों के जीवन की, जिनमें अजरबैजानी जाति भी शामिल है, एक महत्वपूर्ण घटना है। सोवियत जनताओं ने अपना यह संघ इसलिए बनाया क्योंकि वे यह आवश्यकता अनुभव करते थे कि अपने आर्थिक और वित्तीय साधनों को एक-जुट किया जाये तथा गृह-युद्ध एवं विदेशी हमलों द्वारा ध्वस्त अर्थतंत्र का पुनरुद्धार करने के लिए उनका सबसे मुस्तैदी से इस्तेमाल किया जाये और ऐसा करने के बाद समाजवादी समाज के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाया जाये। इसके पहले शताब्दियों के दौरान रूस के विभिन्न प्रदेशों के बीच श्रम का जो ऐतिहासिक विभाजन हो गया था तथा जो निकट आर्थिक सम्बन्ध बन गये थे उनको देखते हुए, सोवियत जनताएं अलग अलग रह कर अपनी प्रगति नहीं कर सकते थे।

सोवियत राज्य एक नये प्रकार का बहुजातीय राज्य है। यह कुछ जातियों द्वारा कुछ अन्य जातियों की अधीनता एवं उत्पीड़न पर आधारित नहीं है, बल्कि उसका आधार समता और बन्धुत्वपूर्ण सहयोग है।

पारस्परिक सहायता की बदौलत और सर्वोपरि रूसी जनता द्वारा दी जाने वाली सहायता की बदौलत पिछड़ा हुआ अजरबैजान तेजी से उद्योगों का तथा उच्च उत्पादन क्षमता से युक्त कृषि का विकास कर सका, और इंजीनियरों, डाक्टरों और अन्य विशेषज्ञों की एक बड़ी टोली तैयार कर सका। संक्षेप में, वह एक ऐसा जनतंत्र बन जा सका जो आज सभी क्षेत्रों में फल-फूल रहा है।

मास्को, लेनिनग्राद, रीगा और स्वर्दलोव्स्क के बने मशीनी औजार अजरबैजानी फैक्टरियों और मिलों में सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं। रोस्तोव, चेल्याबिन्स्क, मिन्स्क और स्तालिनग्राद की बनी कृषि-मशीनें जनतंत्र के खेतों में चल रही हैं। हमारे नगरों और गांवों में गोर्की, ल्वोव और मास्को की बनी यात्री-गाड़ियां, *लारियां और बसें दौड़ती नजर आती हैं।*

सोवियत जनतंत्रों के घनिष्ठ आर्थिक आपसी सम्बन्ध तेज प्रगति करने में सहायक है।

सोवियत संघ की एक वित्तीय पद्धति है। परन्तु प्रत्येक संघटक जनतंत्र का अपना अलग राज्य-बजट होता है। हर साल सोवियत संघ का सर्वोच्च सत्ता-अवयव, अर्थात् सर्वोच्च सोवियत सोवियत, संघ के राज्य-बजट पर विचार करता और उसे पारित करता है। यह बजटआय के स्रोत और राष्ट्रीय अर्थतंत्र तथा सामाजिक सांस्कृतिक और अन्य कार्यों के लिए व्यय निर्धारित करता है। प्रसंगवश बता दें कि बजट-आय का अत्यधिक अंश राज्यीय प्रतिष्ठानों के मुनाफे से प्राप्त होता है। जनता पर कर लगा कर राज्य की आय का केवल ७.८ प्रतिशत ही प्राप्त किया जाता है, और कुछ वर्षों के बाद यह भी खत्म कर दिया जाएगा।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत संघ जनतंत्रों के बजट भी निर्धारित करती है। प्रत्येक जनतंत्र के हितों को सुरक्षित करने के लिए, सर्वोच्च सोवियत में दो बराबरी के सदन होते है—एक संघ सोवियत और दूसरी जातियों की सोवियत। जातियों की सोवियत में सभी संघ जनतंत्रों के प्रतिनिधियों की सख्या बराबर होती है। प्रत्येक स्वायत्त जनतंत्र, स्वायत्त प्रदेश और जातीय क्षेत्र को भी बराबर प्रतिनिधित्व प्राप्त है। संघ सोवियत और जातियों की सोवियत में पूरी बहस के बाद सोवियत संघ का

राज्य-बजट दोनों सदनों की संयुक्त बैठक के समक्ष अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

संघ जनतंत्रों के बजटों के आय-व्यय में उनके अधिकार-क्षेत्र के प्रतिष्ठानों की आमदनी तथा सोवियत संघ के राजस्व का एक निश्चित प्रतिशत शामिल है।

संघ जनतंत्रों के बजट वर्ष प्रति वर्ष बढ़ते ही जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, अजरबैजान का १९५९ का बजट ५,२८,६८,५०,००० रूबल का है, यानी १९५८ के बजट से लगभग साढ़े बाईस करोड़ अधिक का है।

अन्य सोवियत जातियों की बन्धुत्वपूर्ण सहायता से अजरबैजानी जनता ने बहुत बड़ी आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति की है।

हमारी मुख्य सम्पदा

अजरबैजान पहले केवल अपने तैल-उद्योग के लिए विख्यात था। अब हमने विद्युत-उत्पादन, इंजीनियरी लोहा और इस्पात, अलौह धातुयें, कच्चे खनिजों और रासायनिक द्रव्यों जैसे भारी उद्योगों का निर्माण कर लिया और उन्हें उच्च स्तर तक विकसित कर लिया है। हमने हलके उद्योगों में, खासकर कपड़ा-उद्योग का विस्तार करने में भी बड़ी प्रगति की है। सोवियत काल में हमारा औद्योगिक उत्पादन लगभग ४० गुना बढ़ गया है। (इसमें तैल निकालने का उद्योग सम्मिलित नहीं है)। तैल-उद्योग का उत्पादन ६.७ गुना बढ़ा है।

अजरबैजान का अर्थतन्त्र सोवियत संघ के मध्यवर्ती प्रदेशों के अर्थतन्त्र की अपेक्षा अधिक तेज गति से ˉ । (१९१३ से १९५८ के बीच पूरे सोवियत संघ का कुल औद्योगिक उत्पादन ३६ गुना बढ़ा।) इसका कारण जारशाही रूस के भूतपूर्व सीमान्तवर्ती प्रदेशों का सबसे अधिक तेजी के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति करने की सोवियत सरकार की नीति है।

अजरबैजान अब खनिज लौह, इस्पात, रोल्ड स्टाक, अलुमीनियम, सश्लेषित रबर, तैल उद्योग की मशीनें, बाल-बेयरिंग, बिजली के सामान, सचल विद्युत-जेनरेटर, इस्पात के पाइप, भवन निर्माण सामग्री, टेलीविजन

बाकू विद्युत इंजीनियरिंग कारखाने का पुर्जे जोड़ने का खाना। इस कारखाने के बने सामान सोवियत संघ में ही नहीं वरन् कई बाहरी मुल्कों में भी लोकप्रिय हैं।

सन् १९२० के पहले तेल केवल अप्शेरोन प्रायद्वीप पर ही निकाला जाता था। पर आज तेल के दक्षिण कुरा नदी के किनारे, पर्वतों की तलहटी में और यहां तक कि कैस्पियन सागर के अन्दर तक फैले हुए हैं।

हमारी राजधानी बाकू को लोग अक्सर "तेल का विद्यालय" कहा करते हैं और यह सर्वथा उचित भी है। सोवियत संघ के तेल-क्षेत्रों में काम करने वाले अनेक इंजीनियरों ने यहां उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त किया था। विदेशों से भी तेल-उद्योग सम्बन्धी विविध शिल्प सीखने के लिए अजरबैजान आते हैं।

अजरबैजान के तेल निकालने वालों ने एक नयी बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की है—उन्होंने नये गैस-भण्डार विकसित किये हैं। प्राकृतिक गैस का उत्पादन तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले वर्ष कुल लगभग ४५,००,००० घन मीटर गैस निकाली गयी। इस जनतंत्र के प्राय सभी बिजलीघर, औद्योगिक प्रतिष्ठान और नगर-सेवाएं अब गैस से चलते हैं, जो अत्यन्त सुविधाजनक और किफायती ईंधन है।

१९५७ मे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की पहल पर उद्योग और निर्माण की प्रबन्ध-प्रणाली का जो पुन सगठन किया गया, उसने हमारे औद्योगिक विकास को तेज करने मे और भी बड़ा काम किया है। हमारे जनतंत्र मे एक आर्थिक परिषद की स्थापना की गयी और यह परिषद बहुत अच्छा काम कर रही है। उसके कार्य-क्षेत्र के अन्तर्गत ३८० से अधिक औद्योगिक और निर्माण प्रतिष्ठान तथा अन्य सगठन है।

पहले ये सभी प्रतिष्ठान और सगठन सरकारी एजेसियो के मातहत थे। सब से बड़े प्रतिष्ठान सोवियत संघ मत्रालयों के अधीन थे, जिनके सदर-मुकाम मास्को मे थे। कुछ अन्य अजरबैजान के मत्रालयों के मातहत थे। इस प्रबन्ध-प्रणाली ने अपने जमाने मे ठोस काम किया था। उसने एक ऐसे काल मे जब अजरबैजान का अर्थतंत्र अपने पैरो पर खड़ा हो रहा और ताकत हासिल कर रहा था, श्रम और कच्चा माल के समाधनों को तथा उत्पादन-क्षमताओं को भी सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों मे केन्द्रित करने मे सहायता दी।

परन्तु अब जब कि अजरबैजान का अर्थतंत्र उच्च स्तर पर पहुँच गया है, जब उसके पास उच्च योग्यता से युक्त स्वय अपने आर्थिक कार्याधिकारी और

इ जीनियर हो गये है, जनतंत्र के आर्थिक जीवन का इस ढग से पुन सगठन किया गया है कि सभी प्रतिष्ठानो और कर्मचारियो की पेशकदमी के लिए ज्यादा से ज्यादा गु जायश हासिल हो । जनतत्र की सभी फैक्टरिया, मिलें, खानें; निर्माण-परियोजनाए और अन्य प्रतिष्ठान अजरबैजान आर्थिक परिषद के अधीन है । आर्थिक परिषद की स्थापना से अजरबैजान और भी तेजी से आर्थिक उन्नति करने लगा है ।

सामूहिक और राज्य फार्म

अजरबैजान मे इस समय १५०० बडे सामूहिक फार्म और ७५ राज्य फार्म है । वर्ष प्रति वर्ष हमारा कृषि-क्षेत्र, कृषि-उत्पादन, पशुधन और पशुधन-उत्पादकता बढते जाते है ।

१९५४ से १९५८ के पाच वर्षों मे हमारी मुख्य औद्योगिक फसल, कपास का उत्पादन पिछले पाच वर्षों की तुलना में ६८ प्रतिशत, तम्बाकू का

[illegible] में [illegible] का एक दृश्य । सामूहिक किसान मशीनों द्वारा चुनी कपास उतार रहे है

२७ प्रतिशत, हरी चाय की पत्तियों का लगभग २०० प्रतिशत, अंगूर का ५० प्रतिशत, और सब्जी का १०० प्रतिशत बढ़ गया। कुल कृषि क्षेत्र जो १९५३ में ११,०६,००० हेक्टर था, १९५८ में १२,४८,००० हेक्टर हो गया।

मवेशियों की संख्या पांच वर्षों में १,७६,७०० अधिक हो गयी। इसमें गायों की संख्या में ६५,७०० की वृद्धि हुई। मांस का उत्पादन (ढोरों के गल्लों की संख्या-वृद्धि को देखते हुए) ६३ प्रतिशत, दूध का ६४ प्रतिशत, अंडों का ७० प्रतिशत और ऊन का २० प्रतिशत बढ़ गया। ऊन की वृद्धि के अन्तर्गत, महीन ऊन और आधी महीन ऊन की किस्मों में लगभग २०० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

कृषि के विकास पर १९५२-१९५६ के बीच कुल राज्य-व्यय २ अरब रूबल हुआ। सिंचाई और जल-निकासी पर बड़ी-बड़ी धन-राशियां खर्च की गयी हैं। ६६ जिलों में जहां सिंचाई पर कृषि होती है, नहरों की कुल लम्बाई ४५,००० मीटर है और जल-निकासी की प्रणाली ३,००० मीटर लम्बी है। सिंचाई और जल-निकासी का खर्च इनसे ही बहुत जल्द पूरा हो जाता है। कपास की प्रति हेक्टर उपज अब १९२० की तुलना में लगभग ६ गुनी अधिक है। अनाज, तम्बाकू, अंगूर और अन्य फलों तथा रेशम के कोये की उपजों में वृद्धि हुई। पशुजनित पदार्थों का उत्पादन भी बढ़ गया है।

अजरबैजान की कृषि की ये उपलब्धियां अर्थतंत्र की इस शाखा को तेजी से उन्नत करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा निर्धारित कार्रवाईयों पर अमल करने का नतीजा है। ये कार्रवाईयां निम्नलिखित हैं: राज्य द्वारा कृषि की उपजों की खरीदारी के दामों में वृद्धि, सामूहिक कृषकों के निजी अर्थतंत्र में से राज्य की वसूलियों का बिलकुल खात्मा, सामूहिक फार्मों की मशीनों में बड़ी वृद्धि, बगुवा उत्पादन और प्रविधि कर्मियों को कृषि-क्षेत्र में भेज कर उसे शक्ति प्रदान करना, आदि।

इंजीनियर हो गये हैं, जनतन्त्र के आर्थिक जीवन का इस ढंग से पुनर्गठन किया गया है कि सभी प्रतिष्ठानों और कर्मचारियों की पेशकदमी के लिए ज्यादा से ज्यादा गुंजायश हासिल हो। जनतन्त्र की सभी फैक्टरियां, मिलें, खानें; निर्माण-परियोजनाएं और अन्य प्रतिष्ठान अजरबैजान आर्थिक परिषद के अधीन हैं। आर्थिक परिषद की स्थापना से अजरबैजान और भी तेजी से आर्थिक उन्नति करने लगा है।

सामूहिक और राज्य फार्म

अजरबैजान में इस समय १५०० बड़े सामूहिक फार्म और ७५ राज्य फार्म हैं। वर्ष प्रति वर्ष हमारा कृषि-क्षेत्र, कृषि-उत्पादन, पशुधन और पशुधन-उत्पादकता बढ़ते जाते हैं।

१९५४ से १९५८ के पांच वर्षों में हमारी मुख्य औद्योगिक फसल, कपास का उत्पादन पिछले पांच वर्षों की तुलना में ६८ प्रतिशत, तम्बाकू का

शीरवान स्तेपी में शरदकाल का एक दृश्य। सामूहिक किसान मशीनों द्वारा चुनी कपास उतार रहे हैं

२७ प्रतिशत, हरी चाय की पत्तियों का लगभग २०० प्रतिशत, अंगूर का ५० प्रतिशत, और सब्जी का १०० प्रतिशत बढ़ गया। कुल कृषि क्षेत्र जो १९५३ में ११,०६,००० हेक्टर था, १९५८ में १२,४८,००० हेक्टर हो गया।

मवेशियों की संख्या पांच वर्षों में १,३६,७०० अधिक हो गयी। इसमें गायों की संख्या में ६५,७०० की वृद्धि हुई। मांस का उत्पादन (ढोरों के गल्लों की संख्या-वृद्धि को देखते हुए) ६३ प्रतिशत, दूध का ६४ प्रतिशत, अंडों का ७० प्रतिशत और ऊन का २० प्रतिशत बढ़ गया। ऊन की वृद्धि के अन्तर्गत, महीन ऊन और आधी महीन ऊन की किस्मों में लगभग २०० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

कृषि के विकास पर १९५२-१९५६ के बीच कुल राज्य-व्यय २ अरब रूबल हुआ। सिंचाई और जल-निकासी पर बड़ी-बड़ी धन-राशियां खर्च की गयी है। ६६ जिलों में जहां सिंचाई पर कृषि होती है, नहरों की कुल लम्बाई ४५,००० मीटर है और जल-निकासी की प्रणाली ३,००० मीटर लम्बी है। सिंचाई और जल-निकासी का खर्च इनसे ही बहुत जल्द पूरा हो जाता है। कपास की प्रति हेक्टर उपज अब १९२० की तुलना में लगभग ६ गुनी अधिक है। अनाज, तम्बाकू, अंगूर और अन्य फलों तथा रेशम के कोये की उपजों में वृद्ध हुई। पशुजनित पदार्थों का उत्पादन भी बढ़ गया है।

अजरबैजान की कृषि की ये उपलब्धियां अर्थतंत्र की इस शाखा को तेजी से उन्नत करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा निर्धारित कार्रवाईयों पर अमल करने का नतीजा है। ये कार्रवाईयां निम्नलिखित हैं: राज्य द्वारा कृषि की उपजों की खरीदारी के दामों में वृद्धि, सामूहिक कृषकों के निजी अर्थतंत्र में से राज्य की वसूलियों का बिलकुल खात्मा, सामूहिक फार्मों की मशीनों में बड़ी वृद्धि, अगुवा उत्पादन और प्रविधि कर्मियों को कृषि-क्षेत्र में भेज कर उसे शक्ति प्रदान करना, आदि।

हमारे नगर

सोवियत व्यवस्था के ३६ वर्षों में अजरबैजान के नगरो की आकृति बिलकुल बदल गयी है। कई नये औद्योगिक केन्द्र कायम हो गये हैं। सुन्दर बाकू नगर चौडी खाड़ी के किनारे-किनारे फैल गया है। अब यहा की आबादी ६,६८,००० है। सुन्दर खान का महल, कुमारी मीनार और अग्नि-पूजकों का सुहरन मंदिर जो इस बात की याद दिलाता है कि इस इलाके में गैस के सोते फूटा करते थे, नगर की प्राचीनता के चिन्ह है। पुराना नगर जिसे किला कहते है, और उसकी भूलभुलैया जैसी तग गलिया नगर

अजरबैजान की राजधानी बाकू का निजामी मैदान
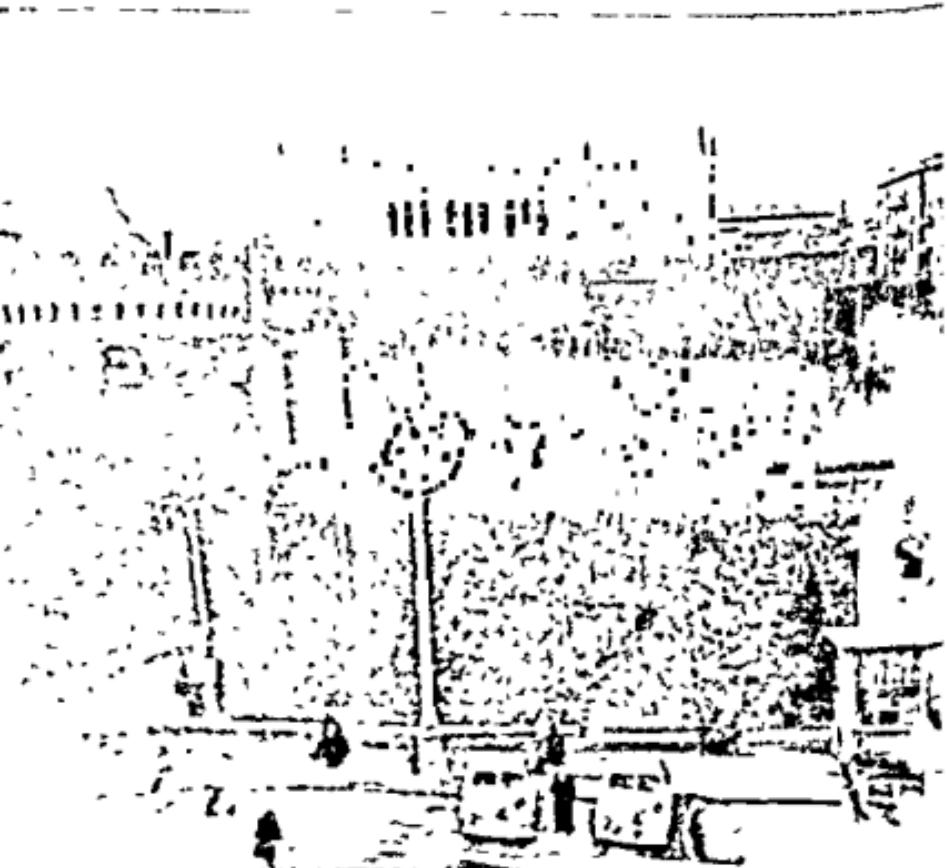
के प्राचीन इतिहास की कहानी सुनाती हैं। परन्तु बाकू की खास खूबी उसकी प्राचीनता नहीं है। बाकू तो नया नगर है जिसने कायाकल्प करा कर नयी जवानी प्राप्त की है।

सागर तट से लेकर नगर के ऊंचे भाग तक नये-नये आवास-भवनों की कतारों पर कतारें बनी हुई है। नगर के इस भाग को बसे हुए अधिक दिन नही हुए है, पर यहा की सडको पर घूमने वाले के लिए यह विश्वास करना कठिन है कि यहां पहले पथरीला, उजाड मैदान था। बहु-प्राविधिक संस्थान का विशाल भवन, विज्ञान अकादमी केन्द्र की विशाल इमारतें, होटल और इन सबसे अधिक आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त लम्बे-चौडे फ्लैटों से भरे विशालकाय मकान—इन सब ने नगर का रूप-रंग ही बदल डाला है।

यहा के सबसे सुन्दर मैदानों में से है।

हमारे नगर

सोवियत व्यवस्था के ३६ वर्षों में अजरबैजान के नगरों की आकृति बिलकुल बदल गयी है। कई नये औद्योगिक केन्द्र कायम हो गये हैं। सुन्दर बाकू नगर चौड़ी खाड़ी के किनारे-किनारे फैल गया है। अब यहां की आबादी ६,६८,००० है। सुन्दर खान का महल, कुमारी मीनार और अग्नि-पूजकों का सुहरन मंदिर जो इस बात की याद दिलाता है कि इस इलाके में गैस के सोते फूटा करते थे, नगर की प्राचीनता के चिन्ह हैं। पुराना नगर जिसे किला कहते हैं, और उसकी भूलभुलैया जैसी तंग गलियां नगर

*अजरबैजान की राजधानी बाकू का निजामी मैदान

के प्राचीन इतिहास की कहानी सुनानी हैं। परन्तु बाकू की खास खूबी उसकी प्राचीनता नहीं है। बाकू तो नया नगर है जिसने कायाकल्प करा कर नयी जवानी प्राप्त की है।

सागर तट से लेकर नगर के ऊंचे भाग तक नये-नये आवास-भवनों की कतारों पर कतारें बनी हुई हैं। नगर के इस भाग को बने हुए अधिक दिन नहीं हुए है, पर यहा की सडकों पर घूमने वाले के लिए यह विश्वास करना कठिन है कि यहा पहले पथरीला, उजाड़ मैदान था। बहु-प्राविधिक संस्थान का विशाल भवन, विज्ञान अकादमी केन्द्र की विशाल इमारतें, होटल और इन सबसे अधिक आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त लम्बे-चौडे फ्लैटों से भरे विशालकाय मकान—इन सब ने नगर का रूप-रंग ही बदल डाला है।

वहा के सबसे सुन्दर मैदानों में से है।
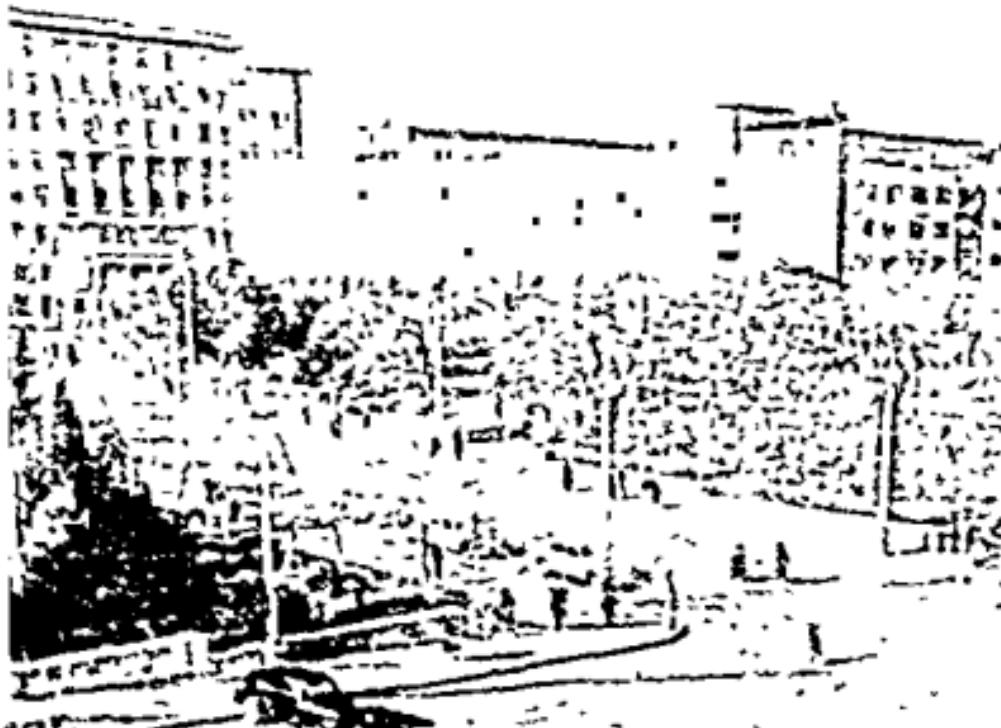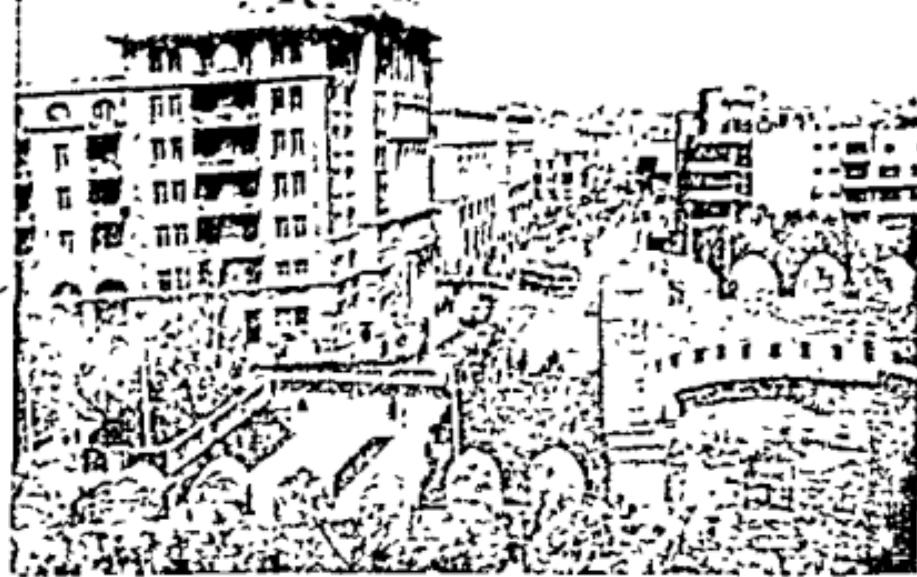
बाकू की एक पुनर्निर्मित सड़क। सोवियत काल में अजरबैजान के नगरों का कायाकल्प हो गया है।

और शहर के ऊंचे भाग में ही नयी बस्ती नहीं बसी है, बाकू के कई अन्य भागों में भी नये-नये फ्लैटों वाले मकान उठ खड़े हुए है।

अजरबैजान के अन्य नगरो का भी कायाकल्प हो गया है। किरोवाबाद खूब फैल गया है। रेशम के लिए प्रसिद्ध नूहा समृद्ध उद्यान-नगरी है। मिंगेचाउर नामक जल-विद्युत केन्द्र नया बसा है। उद्योग का विराट और तरुण केन्द्र सुमगईत जो रमणीक मैदानों, सडको और तरुछायापथो का नगर है, दिनोदिन बढता और संवरता जा रहा है। इस नगर की स्थापना आज से केवल १५ वर्ष पहले सागर तट के एक उजाड स्थान पर हुई थी, पर आज वहा फैक्टरी के मैदान से सागर तट तक विस्तृत चौडी-चौडी सडकें है जिनके दोनो ओर चार-चार और पाच-पाच मजिलों की अट्टालिकाए खडी है।

बाकू में अजरबैजान विज्ञान अकादमी
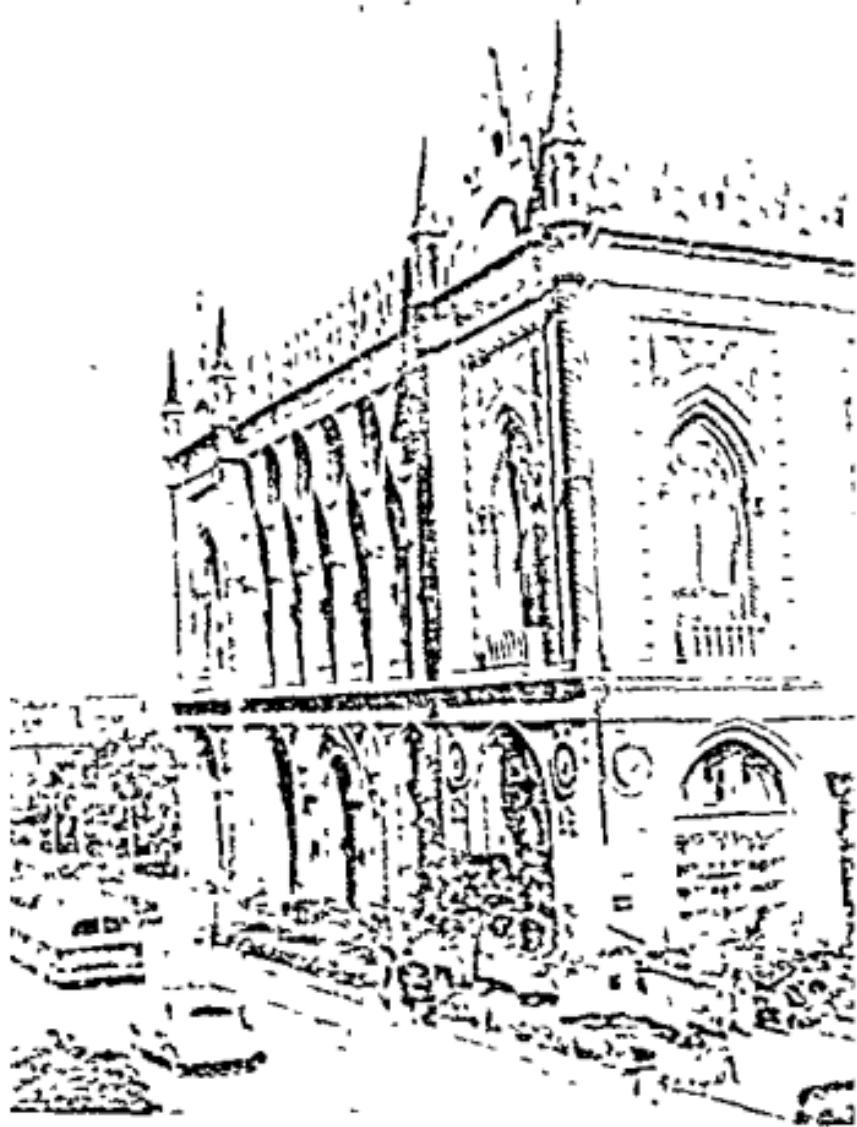
जनता के मंगल-कल्याण के लिए

अजरबैजान का तगड़ा औद्योगिक और कृषि विकास जनता के जीवन स्तर को निरन्तर उन्नत करते जाने का दृढ आधार है। आज बहुत कम लोगो को उन दिनो की याद है जब गरीबी और अज्ञानता ही हजारो अजरबैजानियो का भाग्य और उनकी जिन्दगी थी। गरीबो के गन्दे महल्लों का लोप हो चुका है। बेकारी सदा सर्वदा के लिए मिटा दी गयी है। स्वतन्त्र जीवन में प्रवेश करने वाली तरुण पीढी के लिए सभी दरवाजे खुले हुए है। वे जो धन्धा चाहे चुन सकते है। तैल-क्षेत्रो और फैक्टरियो मे, खानो और अंगूर के खेतों में या कोयला-क्षेत्रों और कपास के बागानो में उनकी रुचि के अनुकूल धन्धे उनकी प्रतीक्षा किया करते है।

सोवियत नागरिक अपने काम से सृजनात्मक सतोष प्राप्त करने के अलावा अच्छी तनख्वाह भी हासिल करता है। लोगो की असल आय वर्ष प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। उदाहरण के लिए, १६४० से १६५८ के काल मे उद्योगो दफ्तरो और व्यवसायो मे काम करने वालो की वास्तविक आय दुगनी हो गयी और सामूहिक कृषको की आय दुगनी से भी अधिक हो गयी।

सोवियत राज्य जनता के हित को सर्वोपरि मानता है। वह जन-जीवन को लगातार सुधारते जाने के लिए सतत सचेष्ट रहता है। उदाहरण के लिए, पिछले कुछ वर्षों में उसने कम तनख्वाह पाने वाली कोटि के फैक्टरी और दफ्तर श्रमिको का वेतन बढा दिया है, कम तनख्वाह पाने वाले फैक्टरी और दफ्तर श्रमिकों तथा कम वजीफा पाने वाले छात्रो को करो से मुक्त कर दिया है, पेन्शनों के बारे मे नया कानून पास किया है जिससे बुढापे की पेन्शनो में काफी बडी वृद्धि हुई है, मुक्त दिवसो और छुट्टी के पहले पडने वाले दिनों में काम का समय दो घन्टा कम कर दिया है, धीरे-धीरे फैक्टरियो में तनख्वाह की कटौती किये बिना ६ या ७ घन्टे का दिन लागू करना शुरू किया है और १६५८ के आरम्भ से,सामूहिक किसानो और फैक्टरी तथा दफ्तर श्रमिको के निजी खेतों को अपनी उपज का कोई भी हिस्सा राज्य को देने से मुक्त कर दिया है।

अजरबैजान में दिनोदिन बढते हुए पैमाने पर मकानो का निर्माण हो रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार इस समस्या पर ज्यादा से ज्यादा

ध्यान देती है। लक्ष्य यह है कि अगले १०-१२ वर्षों के अन्दर सभी सोवियत जन को आधुनिक आवास प्रदान किया जाय। यह कार्यक्रम सफलता के साथ क्रियान्वित किया जा रहा है। भवन-निर्माण के अधिकतर कार्य के लिए राज्य धन देता है। नये फ्लैट लोगों को निःशुल्क दिये जाते हैं। किराया, गैस, बिजली आदि पर जो खर्च पड़ता है, वह बहुत ही थोड़ा होता है, वह किसी परिवार की मासिक आय के ४ से ६ प्रतिशत से अधिक नहीं होता।

नये-नये फ्लैट केवल नगरों में ही नहीं बन रहे हैं। निर्माताओं की एक पूरी फौज ऐसी ज़मीनों को विकसित कर रही है जो बेकार पड़ी थी।

कारादाग का सीमेंट और जिप्सम कारखाना आठ साल पहले बना था। इसके नजदीक ही घनी हरियाली के बीच एक आधुनिक आवास-गृह समूह बनवाया गया है। कारखाने में काम करने वाले लगभग सभी लोगों को दो या तीन कमरों का घर और बागवानी के लिए जमीन का एक बड़ा-सा टुकड़ा मिला है। इन लोगों की माली हालत का अन्दाज लगाने के लिए आपको घरों के अन्दर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि आप बाहर से ही देख लेंगे कि हर घर की छत पर रेडियो और टेलीविज़न के एरियल लगे हुए हैं।

कारादाग कारखाने में शुरू से ही काम करने वालों में एक्सकेवेटर-चालक कियामिलव नजफोव, कुशर का काम करने वाले उज़ीर करीमोव और मैकेनिक यूसुफ ताहिरोव का उल्लेख किया जा सकता है। इन सबके लिए कारादाग ने जीवन की सभी सर्वोत्तम वस्तुयें प्रदान की हैं, यहां वे अपनी रुचि का काम करते हैं और यही उनका घर है जिसमें सुख का राज्य है।

जीवन लम्बे डग भरते हुए आगे बढ़ता जाता है। हर नया साल लोगों के लिए कुछ न कुछ तोहफा, कोई न कोई अच्छी चीज लेकर आता है। लोगों का पहरावा पहले से अच्छा हो गया है। दुकानों में नाना प्रकार की उत्तम वस्तुएं भरी हुई हैं।

उपभोक्ता माल तैयार करने वाली फैक्टरियां प्रतिवर्ष अधिकाधिक परिमाण में ऊनी, रेशमी और सूती वस्त्र, जूते, पोशाकें, बुने माल और अन्य चीजें उत्पादित कर रही हैं। १९५८ में हमारे जनतन्त्र के हलके और खाद्य उद्योगों ने लगभग ७० लाख मीटर रेशमी कपड़ा, लगभग एक करोड़ बुने

अन्डरवियर-बनियाइन आदि, ६५ लाख जोड़ा चमड़े के जूते, ३८ हजार टन मास और सासेज, खाद्य-पदार्थों के ६ करोड़ ६० लाख डिब्बे, ३५ लाख डेकालिटर मदिरा और ढेरसा-मक्खन,चाय, मिठाइयां और अन्य माल उत्पादित किया। ये आकड़े कम नही है यदि आप इस बात को ध्यान में रखें कि हमारे जनतन्त्र की कुल आबादी केवल ३७ लाख है।

समाजवादी देश के हर नागरिक को राज्य के समर्थन तथा सहायता का निरन्तर स्मरण रहता है। उदाहरण के लिए बाकू की वोलोदास्की फैक्टरी की मजदूरनी अकबरोवा ने एक समाचारपत्र को लिखा।

"मैं एक साधारण मेहनतकश नारी हू एक मा हू जिसने आठ बच्चो को जन्म दिया है। एक मां के लिए इससे अधिक सुखकर क्या हो सकता है कि वह अपने बच्चो को स्वस्थ, स्कूल जाता और ईमानदारी से मेहनत करता देखे?

"मेरी सबसे बड़ी बेटी हुमर माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई समाप्त कर वोलोदास्की वस्त्र फैक्टरी में काम करने लगी है। सबसे बडा बेटा एल्दार नवी कक्षा में पढ़ रहा है, तीन और लड़के स्कूल पढ रहे। सबसे छोटे तीन खुदावस्त, इन्तिहाम और सकीना किंडरगार्टेन में है।"

"इतने बड़े परिवार का भरणपोषण मेरे और मेरे पति के लिए बड़ी कठिनाई का काम होता यदि राज्य हमें सहायता न देता। हमें राज्य से मासिक सहायता मिलती है।

"कुछ वर्ष पहले जब बोर्डिंग स्कूल खोले गये तो हमने अपने बेटे ताहिर को उसमे दाखिल करा दिया। वहा उसका खूब मन लगता है।

"कुछ दिन हुए हमारी फैक्टरी का किंडरगार्टेन जिसे हम लोग अपना "पुष्पोद्यान" कहते है, नयी जगह में चला गया जो अधिक कुशादा और आरामदेह है। बच्चे उसमें पूरे सप्ताह ठहर सकते है। हम उन्हें शनिवार को साप्तान्त की छुट्टियों के लिए घर ले आते है।"

अजरबैजान में ऐसे बहुत-से परिवार है। क्रान्ति से पहले इन परिवारों को दु सह जीवन बिताना पडता था, पर आज उनकी जिन्दगी सुखी और फलप्रद है।

अजरबैजान के स्कूल, अस्पताल, मनोरजन-केन्द्र, थियेटर, उपवन और खेल के स्टेडियम पूरी जनता के लिए हैं। वहा कोई बच्चा ऐसा नही जो

अजरबैजान के सर्जन मुस्तफा तोपचीबाशेव जनतंत्र के बाहर भी सुविख्यात हैं।

स्कूल न जाता हो। पर कुछ ही समय पहले तक यहा की आबादी का ६० प्रतिशत निरक्षर था। चालीस वर्ष पहले यहा के अनेक पर्वतीय ग्रामों के निवासी "डाक्टर" या "अस्पताल" शब्द के अर्थ नहीं जानते थे। पर आज अजरबैजान मे ८४०० डाक्टर तथा २३०० अन्य ऐसे व्यक्ति है जिन्हें माध्यमिक चिकित्सा-शिक्षा प्राप्त है। हमारे जन-तंत्र मे आबादी के प्रति हजार व्यक्तियों पर डाक्टरो की संख्या यूरोप, एशिया या अमरीका के किसी भी देश से अधिक है।

अपने 'विन के स्वयं स्वामी

अजरबैजान की जनता को नवजीवन प्राप्त किये केवल ३९ वर्ष हुए हैं। परन्तु जब हम इन ३९ वर्षों मे अपनी जन्मभूमि मे हुए परिवर्तनो पर दृष्टि डालते है तो ऐसा लगता है कि यह अवधि कई शताब्दियो के बराबर रही है। कहने की आवश्यकता नही कि इन परिवर्तनो मे सब से अद्भुत परिवर्तन स्वय लोगो मे हुआ है, हमारे मर्दो मे हुआ है जिन्होने मुक्तश्रम के द्वारा जीवन

शामामा हसनोक़ा का जन्म एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। वह सर्वोच्च सोवियत की सदस्या और अजरबैजान कृषि अकादमी की अवैतनिक सदस्या हैं उन्हें अनेक सरकारी उपाधियां भी मिल चुकी हैं।

अजरबैजान के पास अपने अनेक विज्ञान कर्मी हैं। तरुण स्फूटरूपब हुदू ममेदोव की कृतियां सोवियत संघ में सुविख्यात हैं।

मे योग्य स्थान प्राप्त किया है, और औरतों में हुआ है जिन्होंने घृणित बुरकों को फाड़ फेंका है और पुरुषों के साथ समता प्राप्त की है।

अलादीन और उसके अद्भुत चिराग की कहानी समूचे प्राच्य जगत में प्रसिद्ध है। चिराग की बदौलत अलादीन को गुप्त खजाने मिल गये थे। अजरबैजान की जनता को देखकर यह कहानी बरबस याद आ जाती है।

गड़रिया महमूद हसनोव और उसकी पत्नी हलीसा से आज से ४० वर्ष पहले यदि किसी ने कहा होता कि तुम्हारी बेटी देश के प्रशासकों में होगी तो वे इसे कपोलकल्पित कहानी समझते। पर आज महमूद की पुत्री समामा सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत की सदस्या और अजरबैजान की कृषि अकादमी की अवैतनिक मेम्बर है। अच्छे काम के लिए उसे उच्च सरकारी सम्मान प्रदान किया गया है।

अनेक मजदूरों और किसानों के बच्चे विख्यात व्यक्ति बन गये हैं निरक्षर किसान के बेटे द्दूद् महम्मदोव २५ वर्ष की अवस्था में ही प्रसिद्ध भिस्टूलोग्राफर बन गये। अस्लन उस्मानोव जुलियम नामक पर्वतीय ग्राम के निवासी हैं, १६४४ मे १६ वर्ष की उम्र मे वह कई मित्रों के साथ गांव छोड़ कर सुमगईत नगर का निर्माण करने के लिए चले गये। आज राजमिस्त्री उस्मानोव का नाम यूक्रेन, साइबेरिया, बाल्टिक जनतन्त्रों और कजाकस्तान मे मशहूर है। सुमगईत मे १५ वर्षों के अपने कार्य में उन्होंने एक ट्यूब रोलिंग मिल, एक सश्लेषित रबर कारखाना अनेक स्कूल और मकान बनाने में हिस्सा लिया। आज अनेक नगरो के राज उस्मानोव से कार्य की उनकी विशेष विधियां सीखने आते है।

उस्मानोव फाजल वक्त में उस माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थी बन गये जिसकी इमारत उन्होने और उनकी टोली ने बनाई थी। विवाह के बाद वह एक फ्लैट में रहने लगे जिसे बनाने में भी उन्होने हाथ बंटाया था।

वह कम्यूनिस्ट पार्टी की २१ वी कांग्रेस के प्रतिनिधि थे। जिसमें १६५६-६५ में सोवियत अर्थ तन्त्र के विकास के आकड़े निर्दिष्ट किये गये थे।

ये इक्की दुक्की मिसालें मात्र नही है। अजरबैजान में अनेक नर-नारियों का ऐसा ही जीवन रहा है।

"विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग"

सोवियत संघ में सभी नागरिक कानून की नजर में बराबर हैं। आदमी की स्थिति धन-सम्पत्ति अथवा खानदान से नही बल्कि उसके काम से आंकी जाती है वहां कोई विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग या सामाजिक समूह नही है। अपवाद केवल एक है—बच्चे।

अजरबैजानी बच्चों को बहुत प्यार करते है। पार्कों और खेल के मैदानो सभी उम्र के बच्चे खेलते दिखाई देते हैं। नन्हे-मुन्नो से लेकर किशोर पायनियरो की लाल टाई बांधे और साफ स्कूली पोशाक पहने लड़के-लड़कियां—सभी आपको यहां मिलेंगे। खेल के हर मैदान में द्वार के ऊपर मे शब्द लिखे रहते हैं—खुशहाल दिनीज (स्वागत)।

अजरबैजान में बड़े परिवारों का चलन है। यहां का सबसे बड़ा परिवार बाकू का किशोर पायनियर प्रासाद है। यहां ५०० बच्चे स्कूल की पढ़ाई के बाद के घण्टे स्वास्थ्यप्रद मनोरंजन में बिताते हैं। प्रासाद की अपनी समवेत गान-मण्डली, वाद्य मण्डली और नृत्य मण्डलियां हैं जो कंसर्टों, मिलों और सामूहिक फार्मों में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किया करती हैं। उनके कार्यक्रम की खास लोकप्रिय चीज "जुदत्ति यालरीम" या "चूजे" है। यह गीत समूचे सोवियत संघ में लोकप्रिय हो गया है। इसे बड़े लोग भी नृत्य-गीत कार्यक्रमों में गाते हैं और सोवियत कलाकार इसे विदेशों में भी प्रस्तुत करते हैं।

"चूजे" का स्वरकार मम्बर हुसेनअली नामक एक स्वशिक्षित संगीतज्ञ है। बाकू के किशोर पायनियर प्रासाद की नृत्य-मण्डली ने गीत के उपयुक्त नृत्य तैयार किया है। पीली पोशाकों में जो चूजे का प्रतीक है, इस सरल नृत्य के तालों पर स्कूली उम्र से कम के बच्चों को नाचते देखना अनोखा आनन्द प्रदान करता है।

बाकू के किशोर प्रासाद के बच्चे हवाईजहाज के माडल बनाना, चित्रकारी, बेलबूटाकारी, संगीत, फोटोग्राफी और चलचित्र निर्माण सीखते हैं। अजरबैजान के अन्य नगरों और गांवों में भी बच्चे अपने किशोर पायनियर भवनों में ये कलाएं सीखते हैं।

बच्चे ही भविष्य की आशा है। इसीलिए उनकी देखभाल के लिए सब कुछ किया जाता है। उनके लिए स्कूल, किशोर पायनियर प्रासाद, [illegible] कालीन, शिविर, नर्सरियां और किंडर गार्टेन बनवाए जाते हैं। [illegible] से पहले के अजरबैजान में बच्चों का एक [illegible] था। [illegible] की स्थापना के बाद ही बच्चों के लिए [illegible]। बाकू का अच्छा-अच्छा कल्याण केन्द्र, [illegible]। आज अजरबैजान में हर नगर, हर [illegible] [illegible] क्लिनिक, चिकित्सा, परामर्श केन्द्र और बच्चों के [illegible] केन्द्र हैं। बच्चों के स्वास्थ्य केन्द्र और आरोग्य भवन अजरबैजान के [illegible] स्थानों में बनाये गये हैं। जैसे [illegible], [illegible], और [illegible] आदि [illegible] प्रायद्वीप के [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] हैं। हम लोग अपने बच्चों के स्वास्थ्य और जीवन की रक्षा [illegible] करना जानते हैं।

जनता के लिए संस्कृति

सोवियत राज्य-काल में हर अजरबैजानी के लिए सच्ची, सर्वांगीण संस्कृति की उपलब्धि की गयी है। आज ७,५०,००० लोग, यानी इसके यहां का हर पांचवां व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की पढ़ाई कर रहा है। वयस्क शिक्षा का व्यापक प्रसार है। तेल ड्रिलिंग के विशेषज्ञ नजफ़ पीरी ने १४ वर्ष की उम्र में काम करना शुरू किया था। ४० वर्ष की उम्र में उन्होंने फिर से स्कूल में पढ़ना शुरू किया। ६५ वर्ष की उम्र में उन्होंने इंजीनियरी का डिप्लोमा प्राप्त किया। उनके तीन पुत्र मुहम्मद-आगा, इसराफील और दानिश ने उन्नतर शिक्षा प्राप्त की है और स्नातकोत्तर अध्ययन-कार्य किया है। अजरबैजान में वयस्कों और तरुण फैक्टरी-मजदूरों एवं किसानों के लिए ५२९ स्कूल है। पिछले सात वर्षों में १२,२२,००० से अधिक लोगों ने माध्यमिक स्कूलों की पढ़ाई समाप्त की है।

अजरबैजान के १५ उच्चतर स्कूलों और ७२ विशेष-विषयक माध्यमिक स्कूलों में ६२,००० विद्यार्थी है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है। अजरबैजान विज्ञान-अकादमी, कृषि अकादमी, उच्चतर स्कूलों और दर्जनों अनुसन्धान संस्थानों में ५,६११ व्यक्ति सफलतापूर्वक गवेषणा कार्य कर रहे हैं।

क्रान्ति से पहले कुल १२ अजरबैजानी इंजीनियर और ४५ डाक्टर थे। जनता का केवल १० प्रति शत अंश साक्षर था। पर सोवियत अजरबैजान में आज १,२०,००० कालेज शिक्षित विशेषज्ञ है।

१९५८ में अजरबैजान में एक हजार से अधिक पुस्तक पुस्तिकाओं की १४,८६,००० प्रतियां छपी। इनमें ८१० अजरबैजानी भाषा की थीं, जिनकी कुल ७३,८१,००० प्रतियां छपी। जनतन्त्र में प्रकाशित होने वाली १९ पत्रिकाओं और ११८ समाचार पत्रों की वर्ष में १२,८०,००,००० प्रतियां निकलती हैं।

अजरबैजान के अनेक कवियों और लेखकों की कृतियां सोवियत संघ की अन्य भाषाओं तथा कई विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। इनमें समद वुर्गुन, जाफर जबारअली, मेहदी हुसैन, सुलेमान रुस्तम, रसूल रज़ा और

है । सोवियत जनगणों की सांस्कृतिक क्षेत्र की उपलब्धियों का प्रदर्शन हमारे यहां की एक परम्परा बन गई है । यह उत्सव नियमित रूप से किये जा रहे हैं । वे कला और साहित्य सेवियों के कार्यकलाप की कहानी प्रस्तुत करते हैं, तथा उनसे सभी जातियों की संस्कृति समुन्नतता प्राप्त करती है । मास्को ने अछूता गीत सुने और केमानी तारा और साज़ जैसे बाजों को देखा और सुना जो हमारी आम जनता के बीच सदियों से प्रचलित रहे हैं ।

इस उत्सव में मास्को ने तीन अजरबैजानी बैले, कारायेव की सप्त सुन्दरी बदलबेग्ली की कुमारी मीनार और एस. गाजीबेगोव का गुल्यो देखे, और दो अजरबैजानी ओपेरा यू. गाजीबेगोव का, जो अजरबैजानी ओपेरा के संस्थापक हैं, केर ओगली तथा फ्यू अमीरोव का सेविले सुने । इन्हें अजरबैजान ओपेरा और बैले थियेटर ने प्रस्तुत किया था । जिसने जुलफिकार ईमानोव और इब्राहीम जफरोव जैसे प्रसिद्ध गायक और लैला वकीलोवा और मकसूद महम्मदोव जैसे नृत्यकार पैदा किये है ।

कुमारी मीनार एक अजरबैजानी द्वारा रचित सर्वप्रथम बैले है । इसके संगीत के मूल विषय जातीय है और उसमें लोक गीतों और धुनों का व्यापक उपयोग किया गया है । सरकार ने बड़ी कुशलता के साथ अजरबैजानी संगीत के ताने-बाने में जाजिआई, आर्मीनियाई और उज्बेक नृत्यों को गूंथा है । बैले जिस काव्यकथा पर आधारित है, उसमें आम जनता की आन्तरिक शक्ति पर ज़ोर दिया गया है । बैले का नायक दुर्दान्त पौलोद और नायिका मधुर गुलियानाक है । उनकी मुख्य विशेषता है, सुख और उल्लास के लिए अविचल संघर्ष । इनसे ही बैले में हमें वीरत्व और जीवन की प्रति ध्वनि मिलती है यद्यपि उसका उजनो गुलियानाक की मृत्यु में होता है ।

अजीजबेगोव ड्रामा थियेटर मास्को के उत्सव के लिए जो नाटक लाया था, उनमें जे. जबारभली का अत्यस उल्लेखनीय है । कहानी का इसकी घटना पहाड़ों की तलहटी में बसे एक गांव में घटती है और काल है सन् १९२० से १९३० का । नाटक की नायिका तरुणी अध्यापिका अलमास गाव के धनिकों की खुदगरज़ी, धर्मान्धों के अन्धविश्वासों, नारी की गुलामी और किसानों के मस्तिष्क और जीवन में सामन्ती अतीत के अवशेषों के विरुद्ध संघर्ष करती है । बड़ी-बड़ी कठिनाईयां सामने आती हैं, पर अन्त में नव-जीवन की पुरातन

दो ग्रामीण मण्डलियां और अजरबैजान चिकित्सा संस्थान की विचार नृत्य मण्डली भी थी।

सिनेमा अजरबैजान की नवोदित कलाओं में से है, पर उसने भी उल्लेखनीय प्रगति कर ली है। उत्सव में वाक् फिल्म स्टूडियों द्वारा प्रस्तुत बस पूरी लम्बाई के कथाचित्र और नौ वृत्त चित्र दिखाये गये। इनमें अर्शी माल अलान, दूर के किनारे और सौतेली मा सबसे लोक प्रिय हुए।

अजरबैजानी कला और साहित्य समकालीन जीवन में अधिकाधिक रुचि ले रहे हैं। लेखक, कलाकार, स्वरकार और अभिनेता अकसर वाकू के तैल-क्षेत्र, सुमगईत के रासायनिक कारखानों, दस्केसन की खानों और मींगेचहरामलिन में बन रहे सोवियत संघ के प्रथम खुले ताप विद्युत केन्द्र की निर्माणस्थली की यात्राएं करते है। अजरबैजान फिल्म स्टूडियो और केन्द्रीय वृत्त चित्र स्टूडियो ने कैस्पियन सागर के वक्ष पर स्थित नेफ्त्यानिए काम्नी तैल क्षेत्र मे छ महीने बिता कर सागर तल से तैल निकालने के उद्योग का

दस्केसान की एक अभिशोधन मिल। यह मिल पडोसी जार्जिया जनतंत्र के और अजरबैजान के धातुशोधन कारखानों को कच्चा माल देती है।
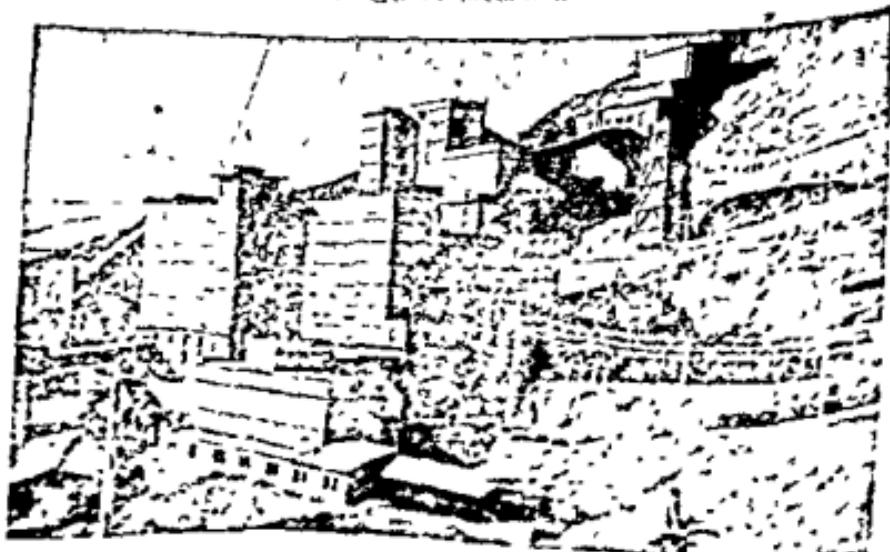
कलाकार मिराइन अब्दुल्लायेव का एक प्रिय विषय है अजरबैजानी किसानों का जीवन।

चित्र बनाया। सागर के विजेता नामक यह फिल्म अत्यन्त प्रेरणादायी बनी है। हमारे चित्रकारों और मूर्तिकारों की अधिकतर कृतियों का विषय हमारे जमाने के लोग हैं।

मास्को का "अजरबैजान कला और साहित्य उत्सव" सोवियत सत्ता काल के ३९ वर्षों में हमारी जाति द्वारा प्राप्त उपलब्धियों का जीता जागता प्रदर्शन था।

अजरबैजान का मुकुटमणि

अजरबैजान में अनेक सुन्दर और सुरम्य स्थल हैं। इनमें सबसे रमणीक और सुसम्पन्न स्थल सम्भवतः कुरा-आरास का नीचा मैदान है। यह कहना कठिन है कि वर्ष की किस ऋतु में यह मैदान सबसे सुन्दर लगता है। बसन्त ऋतु में बागु में पुष्प-उद्यानों, फलों के बागों और फूलों से भरे खेतों की मन्द

सुगन्ध छायी रहती है। जाडो में जब सूर्य की सुखद धूप हरे खेतों, कपास के नन्हे पौधों और मंजेरो और कोपलो से लदे फलो के वृक्षो पर फैल जाती है, तो मानो प्रकृति विहृम उठती है।

ग्रीष्म ऋतु में स्तेपी सुनहरी फसलो से ढकी निःसीम मैदान मे परिवर्तित हो जाती है जिसके बीच-बीच में कपास के वर्गाकार टापू से होते हैं जिनका रग डोडियो के पकने के साथ श्वेत, पीताभ और गुलाबी मे परिवर्तित होता रहता है।

शरद ऋतु मे जब महा काकेशस की पर्वतमाला की बर्फ से ढकी चोटिया चकाचौंध बिखेरती है, उस समय स्तेपी पर जाड़े की फसल के अकुरित होने से हरी मखमली चादर सी बिछ जाती है। सितम्बर और नवम्बर के बीच जनतत्र की सबसे मूल्यवान फसल कपास की कटाई होती है। उस समय कपास के विशाल खेत ऐसे लगते है जैसे किसी देव ने भीमकाय ब्रुश लेकर खेतो पर अनगिनत सफेद डोडिया चुन दी हों।

तूफानी परन्तु अब वशीभूत कुरा नदी पर बना मिंगेचाउर अनेक अजरबैजानी नगरों और गावों को बिजली देता है।

कूरा-आराज मैदान के सामूहिक फार्म और राजकीय फार्म कपास, गेहूं और चावल उगाने के अलावा [illegible] के बाग, सब्जी फल, मांस, दूध और ऊन पैदा करते हैं।

[illegible] इस समृद्धिशाली मैदान को अजरबैजान का मुकुटमणि कहते हैं।
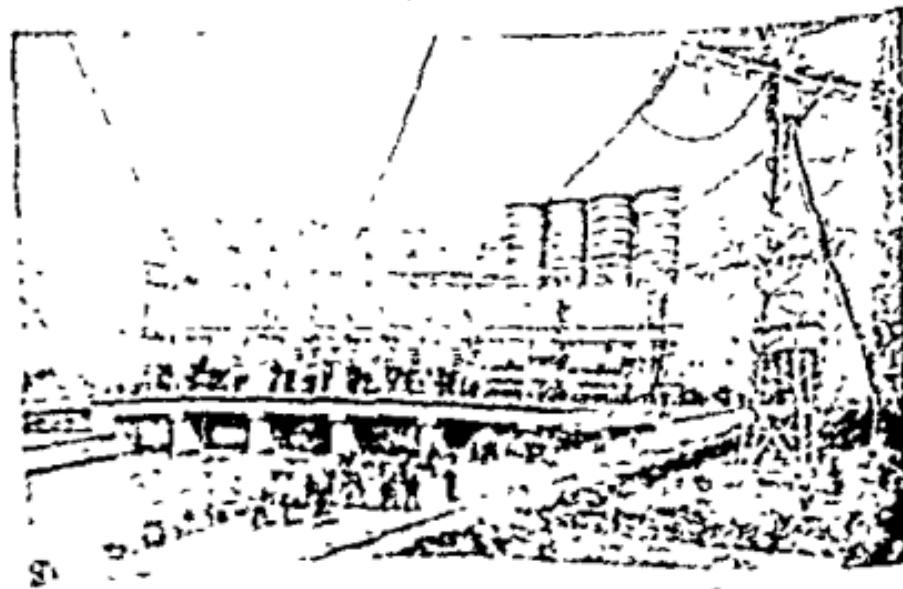
पर अभी कुछ ही दशाब्दियों पहले तक यह मैदान सूखे के कारण झुलसा हुआ रहता था। कुरा और अराज से कारावाख्न, शीरवान, मील और सालियान स्तेपियों तक नहरें बनायी गयीं। कुरा-आराज मैदान में ३००० किलोमीटर से अधिक लम्बाई की राज नहरें हैं। जल-संचय और निकासी की प्रणाली भी लगभग इतनी ही लम्बी है। नहरों और जलागारों में विभिन्न प्रकार के १०,००० से अधिक जल प्राविधिक ढांचे बने हुए हैं। इससे अजरबैजानी किसानों को हजारों हेक्टर उर्वर भूमि और मिल गयी है।

हाल के वर्षों में अजरबैजान में निर्मित की जाने वाली परियोजनाओं में सबसे बड़ी और जटिल परियोजना मिंगेचौर जल-विद्युत केन्द्र है। इसने १९५५ में चंचल और तेज कूरा नदी को सदा के लिये बांध दिया। बोज़दाग पर्वत की एक दरार में, एक लाख नगर से पहले प्रतिभा का सबसे ऊंचा मिट्टी का बांध बनाया गया। अब कूरा की बाढ़ें खेतों और गांवों को नहीं बरबाद किया करती। उसका जल एक विशाल जलागार में जमा हो जाता है और उसमें शक्तिशाली टर्बाइन चलाने का काम लिया जाता है। इससे प्राप्त बिजली सस्ती कीमत पर और प्रचुर मात्रा में अजरबैजान को ही नहीं बल्कि पड़ोसी जार्जिया और आर्मीनिया को भी दी जाती है।

कुरा-अरास मैदान निरन्तर उन्नत होता जा रहा है। उसकी सफलता सुन्दरता और उत्पादकता वर्ष प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है।

भविष्य

मनुष्य सदा से भविष्य को जानने का इच्छुक रहा है। चालीस वर्ष पहले हमारे पिता और दादा ऐसे भविष्य की कल्पना करते थे जिसमें उनके बच्चे अच्छा खायेंगे, अच्छा पहनेंगे, खूब पढ़े लिखेंगे और अच्छे सुसस्कृत जन बनेंगे अजरबैजान में कोई बेरोजगार और बेघर नहीं रहेगा, हर श्रमजीवी को सुखी जीवन बिताने का हक हासिल होगा। ये बड़े साहसिक सपने थे जिनकी पूर्ति का दिन बहुत-बहुत दूर ज्ञात होता था।

पर यह सपना सचमुच पूरा हो गया। और थोड़े समय में पूरा हो गया। जैसा सोचा गया था उससे बहुत पहले पूरा हो गया। अप्राप्य ज्ञात होने वाली चीज़ प्राप्त हो गयी। यह जनता के निःस्वार्थ कार्य की बदौलत और समाजवादी अर्थ-व्यवस्था की बदौलत हुआ, जो वैज्ञानिक आधार पर निर्मित योजनाओं के अनुसार विकसित होती है। इन योजनाओं में लाखों जनता का सामूहिक चिन्तन समाविष्ट है। ये हजारों फैक्टरी-मजदूरों, किसानों, इंजीनियरों और वैज्ञानिकों के सृजनात्मक कार्यकलाप के परिणाम हैं।

सोवियत अर्थतन्त्र के विकास की चालू योजना (१९५९-१९६५) भी सामूहिक चिन्तन की उपज है। इस योजना की रचना में पांच करोड़ लोगों ने

हिस्सा लिया था। सोवियत जन जो प्राप्त करने के सपने आज देख रहे हैं, वे ही सप्तवर्षीय योजना के ठोस आंकड़ों में निहित हैं।

इस योजना की पूर्ति हो जाने पर सोवियत संघ आज से भी अधिक शक्तिशाली और सम्पन्न हो जायेगा। कुछ महत्वपूर्ण मालों के उत्पादन में वह अमरीका को मात दे देगा। कुछ अन्य में वह अमरीका के औद्योगिक उत्पादन के वर्तमान स्तर के पास पहुंच जायगा। सोवियत संघ कृषि की प्रमुख उपजों के कुल और प्रति व्यक्ति उत्पादन में अमरीका के वर्तमान स्तर से ऊपर चढ़ जायगा। इन सात वर्षों में सोवियत किसानों और वेतन-भोगियों की वास्तविक आय ४० प्रतिशत बढ़ जायगी।

लगभग दूना

अगले सात वर्षों में अजरबैजान और भी समृद्ध हो जायगा। १९६५ में उसके उद्योग १९५८ की अपेक्षा ९० प्रतिशत अधिक माल उत्पादन करेंगे। दूसरे शब्दों में उनका उत्पादन लगभग दूना हो जायगा।

प्रसंगवश यह दें कि १९६५ में सोवियत संघ का कुल औद्योगिक उत्पादन सप्तवर्षीय योजना के आरम्भ से ८० प्रतिशत अधिक हो जायगा। ऐसी हालत में अजरबैजान की ९० प्रतिशत औद्योगिक वृद्धि इस बात का उदाहरण होगी कि सोवियत सरकार भूतपूर्व पिछड़ी जातियों पर विशेष ध्यान देती है।

अजरबैजान के औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि मौजूदा कारखानों को बढ़ा कर, नयी फैक्टरियां और मिलें खोलकर, नयी खानें और तेल-कूप खोद कर, यन्त्रीकरण और स्वचालनकरण का और प्रयोग कर तथा आधुनिकतम मशीनें जोड़कर उपलब्ध की जायगी। सप्तवर्षीय योजना के वर्ष भारी आर्थिक प्रगति के वर्ष होने जा रहे हैं।

तेल ही अजरबैजान के अर्थतन्त्र की मुख्य शाखा रहेगा। उसका उत्पादन ३३ प्रतिशत बढ़ाया जायगा। १९६५ में कुल तेल-उत्पादन २२ करोड़ टन हो जायगा। कैस्पियन सागर का तेल-नगर नेफ्त्यानिए काम्नी काफी बड़ा बना दिया जायेगा। इस नगर से इस्पात के दस्तर सागर के अन्दर तैरते अड्डे भण्डारों तक दर्जनों किलोमीटर और दूर फैला दिये जायेंगे। कास्पियन के

निकट जहां कुछ दिन हुए तेल की खोज करते समय पहली ही सूराख करने पर तेल का सोता फूट पड़ा था, सागर के वक्ष पर डेरिकों का एक जंगल लगा दिया जायेगा

खुदाई की गति और गहराई बढ़ जाने से कई ऐसे तेल और गैस के भण्डार मिलेंगे जो अभी पहुंच के बाहर हैं। कारादाग में गैस की खोज होने और उसे उपयोग में लाने का नतीजा यह हुआ है कि आज अजरबैजान में प्रयुक्त कुल ईंधन का लगभग ८० प्रतिशत गैस के रूप में है। इससे श्रम उत्पादकता में वृद्धि हुई है और उद्योग की कार्य-क्षमता बढ़ गयी है।

सप्तवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्राकृतिक गैस के उत्पादन में खास तौर पर वृद्धि की जायगी। वह १६० प्रतिशत बढ़ जायगी। १९६५ में कुल ११,६०,००,००,००० घन मीटर गैस प्राप्त होने लगेगी। सर्वप्रथम, इससे अजरबैजान में विकसित हो रहे शक्तिशाली रसायन उद्योग का कच्चा माल प्राप्त होगा दूसरे फैक्टरियों और घरों में और भी विस्तृत पैमाने पर गैस का इस्तेमाल किया जा सकेगा। तीसरे अजरबैजान पड़ौसी जार्जिया और आर्मीनिया की मदद कर सकेगा। जब ट्रासकाकेशियाई गैस पाइपलाइन निकट भविष्य में ही बन कर तैयार हो जायगी तो बाकू त्बिलिसी और देरेयान को सस्ता और सुविधाजनक ईंधन प्रदान कर सकेगा।

कुरा के पास के मैदान में शीरवानी पहाडियों पर और किडरोवदाग में नये तेल-कूप खोदे जाये गे। शोध कार्य से पता चला है कि अन्य स्थानों में भी तेल के बड़े भण्डार मिल सकते हैं।

आर्थिक विकास नियोजित गति से हो सके, इस के लिये अजरबैजान की विद्युत क्षमता में बड़ी वृद्धि की जायगी। १९६५ में अजरबैजान १११,५०,००,००,००० किलोवाट-घन्टा बिजली पैदा करेगा जब कि १९५८ में उसका बिजली उत्पादन केवल ५,६०,००,००,००० किलोवाट घन्टा था। इस वृद्धि का अधिकांश भाग अली बाइरामलिन गैस टर्बाइन स्टेशन की बदौलत होगा जो इस समय निर्मित हो रहा है। यह विद्युत स्टेशन प्राकृतिक गैस पर चलेगा और ढेर सी सस्ती बिजली पैदा करेगा। इसका कोई टर्बाइन, बायलर या सहायक साजसामान ढका नहीं रहेगा। उत्पादन प्रक्रिया पूर्णतया स्वचालित कर दी

[illegible] नेफ्त्यानिये कामनी नगर अजरबैजानी तेल-मजदूरों का गौरव है।

जायगी। ट्रामें और विद्युत साजसमान दूर नियन्त्रण द्वारा संचालित होंगे।

अजरबैजान सप्तवर्षीय योजना के दौरान १,०६५ किलोमीटर विद्युत तार लगाना चाहता है। १९६५ तक जनतन्त्र की हर बस्ती तक बिजली पहुंच जायगी, दूर से दूर तक के पर्वतीय गावों का भी विद्युतीकरण हो जायेगा।

रसायन का जनतंत्र

अजरबैजान की सप्तवर्षीय योजना मे रसायन उद्योग मे बहुत बड़ी वृद्धि करने की व्यवस्था की गई है। इस शाखा का उत्पादन ५४० प्रति बढ़ाया जायगा। एक समाजवादी देश के लिये भी यह असमान्य गति होगी।

अजरबैजान का उच्च विकसित रसायन उद्योग प्रति वर्ष दसियों हजार [illegible] आलकोहल, संश्लेषित रबर, घासपातनाशक, कीटनाशक, डेटर्जेन्ट [illegible]सायनिक पदार्थ उत्पादित कर रहा है। जब इसका और विस्तार

कर दिया जायगा तो कार्बानिक संश्लेषण में उन्नति होगी और तरह तरह के पोलिमेट तैयार होने लगेंगे।

रसायन उद्योग की वृद्धि से अजरबैजान और बड़े परिमाण में तथा भांति-भांति के उपभोक्ता माल तैयार करने लगेगा।

इस समय एक नई फैक्टरी बन रही है जो सावसान तैयार करेगी। यह एक प्रकार का सश्लेषित रेशा है जो ऊन से भी बढ़िया होता है। रासायनिक कारखानों द्वारा उत्पादित प्लैस्टिक की बदौलत अजरबैजान मशीनी पुर्जों, फिटिंग, पाइप और साल्मोनियम का उत्पादन आरम्भ कर रहा है। बाकू में इसी वर्ष संश्लेषित रबर टायरों की एक फैक्टरी चालू हो जायगी।

कुछ वर्षों के अन्दर अजरबैजान अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये पूरी मात्रा में खनिज उर्वरक तैयार करने लगेगा। यहां नाइट्रोजन उर्वरक, सुपरफास्फेट और पोटेशियम के कारखाने बनने वाले हैं।

अजरबैजानी टर्बोड्रिल

सोवियत संघ में जहां तेल निकाला जाता है या शोधकर्ता खनिजों अथवा जल के लिये धरती में वर्मा करते हैं, उन सभी जगहों में अजरबैजान के कारखानों में बने साज-सामानों का ही इस्तेमाल किया जाता है। ये साज सामान विदेशों में भी इस्तेमाल किये जा रहे हैं। सोवियत संघ के टर्बोड्रिल समूची दुनिया में मशहूर हो गये हैं। अमरीकी व्यवसायियों ने इनके निर्माण के पेटेंट खरीदे हैं। भारत में तेल का जो पहला सोता निकला था, इसके लिए भी अजरबैजानी टर्बोड्रिल से खुदाई की गई थी। प्रसंगवश यह दें कि भारत में वर्मा करने का काम अजरबैजान के तेल मिस्त्रियों ने किया था। हमारे प्रसिद्ध वर्मा मिस्त्री शरीफ फतकुलिएव भी उनमें थे।

सप्तवर्षीय योजना में अजरबैजान आर्थिक परिषद इंजीनियरी क्षेत्र में उत्पादन तिगुना कर देगी। बाकू में एक आधुनिक विद्युत इंजीनियरी कारखाने का निर्माण करीब-करीब पूरा हो रहा है। उनके साज-सामान में स्वचालित लाइनें और इलैक्ट्रोनिक गणक भी होंगे। अनेक सघटक उपकरणों को बनाने में वे मानव हाथों और भागों का स्थान ग्रहण करेंगे। श्रम उत्पादकता में महत्वपूर्ण वृद्धि हो जायगी।

करना आवश्यक होगा। रीइन्फोर्स्ड कंकरीट के सामानों के उत्पादन को बढ़ाने पर मुख्य जोर दिया जा रहा है। अगले सात वर्षों में जो निर्माण कार्य अजरबैजान में किया जायगा, उसका विस्तार अभूतपूर्व होगा। आज अजरबैजान के शहरी क्षेत्रों में निर्माण में काम आने वाले क्रेन और लकड़ी के ढांचे सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं। यह उल्लेखनीय है कि १९६५ में सुमगईत के उद्योगों का उत्पादन उतना हो जायगा जितना कि १९५८ में बाकू का उत्पादन था। पर आज से केवल १५ वर्ष पहले उस स्थान पर जहां सुमगईत के कारखाने और आवास भवन खड़े हैं। भेड़ें चरा करती थीं।

कृषि के क्षेत्र की सम्भावनायें

अब आईए देखें कि आगामी सात वर्ष अजरबैजान में कृषि के क्षेत्र में क्या परिवर्तन ले आने वाले हैं। १९६५ में २,७०,००० हेक्टर भूमि में कपास बोयी जायगी और ६ लाख टन उपजायी जायगी। ८,३०,००० हेक्टर भूमि में अनाज पैदा किया जायगा। इसमें से १,६०,००० हेक्टर पर केवल मक्का उगाया जायगा। १९६५ तक तम्बाकू की कुल पैदावार १४००० टन, हरी चाय की ७००० टन और रेशम के कोये की ३६०० टन हो जायगी। ४,७२,००० टन तक सब्जी पैदा की जाने लगेगी।

अजरबैजान जोर शोर से अंगूर की खेती करेगा। आगामी सात वर्षों में १,७४,००० हेक्टर से अधिक पर अंगूर की लतायें लगायी जायेंगी, फलतः १९६५ तक चार लाख टन अंगूर पैदा होने लगेगा। यह १९५८ की पैदावार से ६ गुना अधिक होगा। फलों का उत्पादन १,३०,००० टन तक पहुंच जायगा।

सोवियत संघ में अप्शेरोन प्रायद्वीप ही एक मात्र स्थान है जहां जैतून के वृक्ष अच्छी तरह उगते हैं। इस समय इस प्रायद्वीप के राज्य फार्मों में १२० हेक्टर पर जैतून के बाग हैं। १९६५ तक यह क्षेत्र बढ़ाकर ३००० हेक्टर कर दिया जायगा। तब अप्शेरोन जैतून का एक बड़ा उत्पादक बन जायगा।

सिंचाई और भूमि-उद्धार के अन्य उपायों का और विस्तार किया जायगा। सात वर्षों की अवधि में सरकार नयी नहरें खोदने, जलागार बन-

इसीलिए कम्युनिस्ट पार्टी राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास पर इतना अधिक ध्यान देती है। सोवियत जनता के मंगल कल्याण की वृद्धि की कुंजी उद्योग और कृषि को सफलता पूर्वक विकसित करना है।

यहां हम इस बात का उल्लेख कर सकते है कि सोवियत संघ की समूची राष्ट्रीय आय का जनता के हित मे वितरण किया जाता है। आय का तीन चौथाई भाग वैयक्तिक और सार्वजनिक आवश्यकताओं की पूर्ति मे लग जाता

है। सोवियत सत्ता के आगमन तक नहीं है। मजदूरी और वेतन वहां काम के गुण और परिमाण के अनुरूप होते हैं।

सोवियत जन का जीवन स्तर केवल इसी से निर्धारित नहीं होता कि वे क्या कमाते हैं। उन्हें मुफ्त चिकित्सा सेवा, मुफ्त शिक्षा, राज्य से पेंशनें और सामाजिक बीमा से सम्बद्ध लाभ, सवेतन छुट्टियां, मुफ्त या थोड़ी दर पर स्वास्थ्य स्थलों का उपयोग [illegible] के बच्चों में [illegible] का प्रबन्ध उपलब्ध है। राज्य द्वारा प्रदत्त ये सामाजिक सेवाएं उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने में बहुत बड़ा काम करती रहती हैं। १९५८ में सोवियत संघ में उपरोक्त कामों पर २,१५, ००,००,००,००० रूबल खर्च किया गया। १९६५ में यह रकम लगभग ३,६०,००,०० ००,००० रूबल, यानी प्रति मजदूर लगभग ३८०० रूबल प्रति वर्ष हो जायगी।

सप्तवर्षीय अवधि में उपभोक्ता मालों के उत्पादन में अजरबैजान बहुत बड़ी तरक्की करेगा। इस सिलसिले में बाकू की सूती मिल में एक रंगाई खाना और एक फिनिशिंग फैक्टरी, किरोवाबाद में एक रूई कारखाना, बाकू में एक कपड़ा मिल और एक चमड़ा फैक्टरी, शेकी में एक रेशम मिल, किरोवाबाद में एक कालीन कारखाना, [illegible] में घर के सामान बनाने का एक कारखाना तथा अन्य कारखाने खोले जाएंगे।

सप्तवर्षीय अवधि में सूती कपड़े का उत्पादन ९,३६,००,००० मीटर से बढ़कर १५,८०,००,००० मीटर हो जायगा। रेशमी कपड़े का उत्पादन लगभग ५० प्रतिशत बढ़ जायगा और ऊनी कपड़े का उत्पादन तिगुने से अधिक हो जायगा। अजरबैजान हर मार्कीट, साटन, जाली, सर्ज और गेबर्डीन तैयार करेगा। अजरबैजानी क्रेप, कारमवाली क्रेप, रेशमी चादरें और मेजपोश जैसे लोकप्रिय रेशमी मालों का उत्पादन बढ़ा दिया जायगा। किरोवाबाद का कालीन कारखाना १९६५ तक ५,५०,००० वर्ग मीटर कालीन प्रति वर्ष तैयार करने लगेगा। हमारा जनतंत्र कृत्रिम समूर और कृत्रिम चमड़ा भी उत्पादित करेगा।

मांस, और दूध और दूध के सामानों का उत्पादन खूब बढ़ जायगा। बाकू का मांस की डब्बा बन्दी करने का कारखाना और बढ़ा दिया जायगा, उसकी क्षमता में बड़ी वृद्धि हो जायगी। अगदम में गोश्त जमाने का

कारखाना भार बूचड़खाना बनाये जायंगे। नूहा किरावाबाद और लनकारान में मास की डब्बाबन्दी के कारखाने खोले जायंगे।

बाकू का मुर्गीखाना प्रति वर्ष २,१०,००,००० अण्डे और ३६५ टन मास का उत्पादन करना चाहता है। दूध, मक्खन और पनीर की नयी और आधुनिकतम फैक्टरियां बनायी जायगी।

अजरबैजान का जीवन और भी खुशहाल हो जायगा। अगले साल तक सभी कारखाना और दफ्तर श्रमिकों के लिए सात घण्टे का दिन लागू हो जायगा। जमीन के नीचे काम करने वाले खान-मजदूरों के लिए ६ घंटे का कार्य-दिवस हो जायेगा। १९६४ तक कार्य-सप्ताह ३० या ३५ घंटों का हो जायगा, और सप्ताह में दो दिन छुट्टी रहा करेगी। कार्य-दिवस और कार्य-सप्ताह छोटे हो जायेंगे, साथ ही मजदूरी और बढ़ जायगी।

स्वास्थ्य-सेवाओं बच्चों की नर्सरियों, किंडरगार्टनों और बोर्डिंग स्कूलों में वृद्धि की जायगी। पेंशनें बढ़ा दी जायगी। व्यापार का विस्तार किया जायगा। अगले सात वर्षों में अजरबैजान करीब एक करोड़ वर्ग मीटर मकान अथवा ढाई लाख से अधिक फ्लैट बनायेगा। पिछले सात वर्षों में ३३ लाख वर्ग मीटर मकान बने थे।

२,२३,००० फ्लैटों में गैस पहुंचा दी जायगी। ६८६ किलोमीटर की गैस पाइपलाइन बैठाई जायगी। यह कमखर्च और सुविधाजनक ईंधन किरोवाबाद, एबलाख, शमखोर, गेग्रोकचाई, अगदाश, अख्सू, अली-बैरामअली कजाख, तऊज, अक्स्ताफू तथ अन्य जिलों तक पहुंचा दी जायगी।

राज्य नये अस्पताल बनवायेगा जिनमें चारपाइयों की कुल संख्या ६००० होगी, सप्तवर्षीय योजना के अन्त तक अजरबैजान मे डाक्टरों की सख्या १०,००० और माध्यमिक चिकित्सा शिक्षा प्राप्त लोगों की सख्या ३४००० हो जायगी।

सार्वजनिक शिक्षा पर विपुल धनराशियां खर्च की जा रही है। १९६५ तक अजरबैजान मे सामान्य स्कूलों में विद्यार्थियों की कुल सख्या ८,५४,००० हो जायगी, जब कि १९५८ में वह ५,९६,००० थी। बोर्डिंग स्कूलों मे जिनमें छात्र का पूरा व्यय सरकार वहन करती है, छात्र-छात्राओं की सख्या ३८००० हो जायगी। यह उनकी वर्तमान सख्या की तिगुनी होगी। सप्तवर्षीय अवधि

मे कुल १,२९,००० छात्रों को लेने की क्षमता रखने वाले स्कूल बनवाये जायगे। यह १९५२-५८ की अवधि मे बनवाये गये स्कूलों से ३७० प्रतिशत अधिक होगा।

अजरबैजान के नगरों और देहातों मे नये स्वचालित टेलीफोन एक्स्चेंज बनवाये जा रहे है। एक्स्चेंजों की क्षमता १५० प्रतिशत बढा दी जायगी। १९६५ तक हमारे जनतंत्र मे चार लाख रेडियो सेट हो जायगे। अल्ट्रा शार्ट तरगो पर रेडियो प्रसारण का व्यापक प्रचार हो जायगा। कई टेलीविजन स्टेशन बनाये जायगे और सभी सबसे घनी बस्ती वाले इलाकों के लिए पाच रिले स्टेशन निर्मित किये जाएगे।

बाकू त्बिलिसी रेडियो रिले लाइन के बन जाने पर और भी बहुत से ग्रामवासियों को टेलीविजन उपलब्ध हो जायगा। कई देहाती क्षेत्र इस समय बाकू से प्रसारित टेलीविजन कार्यक्रम ग्रहण कर सकते है। इनमे नेफ्तचाला कुबा सबसाबाद और साल्यानी का उल्लेख किया जा सकता है। जब बाकू त्बिलिसी लाइन पूरी हो जायगी तो ये दोनो नगर बडे पैमाने पर अपने कार्यक्रमों का विनिमय कर सकेगे। बाकू के टेलीविजन दर्शक मास्को के कार्यक्रम और मास्को के जरिये यूरोपीय कार्यक्रम देख सकेगे।

१९६५ तक अजरबैजान के सभी नगरों और गावो मे सिनेमा हो जायगा। सात सिनेमाघर तो अकेले बाकू मे ही बनाये जायेंगे जिनमे से एक पैनोरामा सिनेमा होगा जिसमे २५०० दर्शक बैठ सकेगे। बाकूवासियों के लिए एक नया सर्कस भवन भी बन जायेगा। जनतन्त्र के अन्य भागो मे १४ सिनेमाघर और १२ सास्कृतिक प्रासाद बनाये जायेगे। सप्तवर्षीय योजना काल मे १०८ नये पुस्तकालय भी खोले जायेगे।

सोवियत सघ के नर-नारी पैक्टरियो और मिलो, निर्माणस्थलियो और खानों, खेत-क्षेत्रो और वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं, सामूहिक फार्मों और राज्य फार्मों मे सभी जगह कार्यव्यस्त होकर सप्तवर्षीय योजना के निर्दिष्ट लक्ष्यो

का खरादो और मशीनो, कपड़ा-लत्ता और पोशाकों या अनाज और कपास का साकार रूप प्रदान कर रहे है। वे जानते है कि यह भव्य कार्यक्रम उनके भौतिक हितो की सिद्धि करता है। इसीलिए सर्वत्र वे अपनी श्रम-उत्पादकता को और भी बढ़ाने का सकल्प कर रहे है जिससे कि सप्त-वर्षीय योजना पाच या ६ वर्षों मे ही पूरी हो जाय।

बाकू का तेल-क्षेत्र हो सुमगईत की फैक्टरिया हो दश्केसान की खाने हों, सामूहिक फार्म हो सभी जगह सप्तवर्षीय योजना को समय से पहले ही पूरा कर देने का आन्दोलन फैल रहा है। मास प्रति मास निर्दिष्ट आकडो की अति पूर्ति की जा रही है अजरबैजान के औद्योगिक प्रतिष्ठानो ने १९५९ के प्रथम चार महीनो का अपना कार्यक्रम २८ अप्रैल को यानी समय से दो दिन पहले पूरा कर लिया। उन्हो ने हजारो टन तेल और कच्ची धातु, दसियों हजार मीटर कपड़ा और बहुत से रेफ्रिजेरटर, टेलीविजन सेट और अन्य माल इस अवधि के कार्यक्रम से अधिक पैदा किया। इसमे कोई सन्देह नहीं रहा कि पहले की सभी योजनाओं की भांति हमारी नयी सप्तवर्षीय योजना भी सफलतापूर्वक पूरी हो जायगी।

हम सभी राष्ट्रों के मध्य शान्ति और मैत्री के हामी हैं।

हमने आपको अपनी मातृभूमि अजरबैजान के बारे मे बताया है। यदि हमारी कहानी इससे भी लम्बी होती और उसमे आकडो, उदाहरणों, और तुलनाओं की भरमार होती, तो भी आपको मेरी इस भूमि की पूरी तसवीर नहीं मिल सकती थी। पुरानी कहावत है कि किसी चीज के बारे मे सौ बार सुन लेने से उसे एक बार आखो से देख लेना कहीं ज्यादा अच्छा है। अजरबैजान आने वालो को महान् फ्रेन्च लेखक और मानवतावादी हेनरी बारबुस के शब्द बरबस याद आ जाते है। उन्होने कहा था कि यदि कोई यह देखना चाहता है कि मुक्त जनता कैसे-कैसे चमत्कार दिखा सकती है तो उसे बाकू जाना चाहिए, अजरबैजान जाना चाहिए। अफगानिस्तान बेल्जियम, ब्राजिल, बलगेरिया, बर्मा, ब्रिटेन, इन्डोनेशिया और अनगिनत अन्य देशों के तरुणों, छात्रो, वैज्ञानिको, रगमच के कलाकारो और ट्रेड्यूनियनों के शिष्टमण्डल, सार्वजनिक नेता, पत्रकार, पर्यटक और राजनेता हमारे जन-तन्त्र आ चुके है। हमारे वैज्ञानिक, खिलाड़ी, सार्वजनिक व्यक्ति और

राजनेता यूरोप, एशिया, अफ्रीका, और अमरीका के अनेक देशों की यात्रा कर चुके हैं।

विदेशों से अजरबैजान आने वालों ने हमारे जनतंत्र की आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति को अपनी आंखों से देखा है। उन्होंने उस प्रेम और मैत्रीपूर्ण स्वागत का खास तौर से जिक्र किया है जो हमारे जनतंत्र में उनका हुआ था। काहिरा के आईन शम्से विश्वविद्यालय के रैक्टर अहमद बेदावी ने कहा कि उनके शिष्टमण्डल के सभी सदस्यों को जो सभी के सभी संयुक्त अरब गणराज्य में सांस्कृति और शिक्षा केन्द्र के विशिष्ट व्यक्ति थे, अजरबैजान पहुंचते ही ऐसा लगा मानो वे अपने दोस्तों और बिरादरी के बीच आ गये हों।

हम [illegible] देशों के साथ और भी नजदीकी आर्थिक और सांस्कृतिक सम्पर्क [illegible] करना चाहते हैं। अजरबैजान इस समय अनेक बाहरी मुल्कों [illegible] साजसमान तथा यंत्र, मशीन विद्युत स्टेशन और विद्युत [illegible] रासायनिक माल, सीमेंट सूत, ऊनी वस्त्र तथा महंगी, [illegible] अन्य माल निर्यात कर रहा है।

हम [illegible] है कि बाहर के देशों के साथ अजरबैजानी जनता के [illegible]। हम चाहते हैं कि सभी देश शान्ति [illegible] शान्ति की कामना करते हैं।

[illegible] —